ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

# मानस में आयुध विज्ञान

**डॉ. उमा**

संस्थान - डॉ. सी. व्ही.रमन विश्वविद्यालय,बिलासपुर

ई मेल - umashriwas5@gmail.com

**How to Cite the Article**: उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i8.2026.148-156

| *Keywords* | *Abstract* |
|---|---|
| आयुध विज्ञान, युद्ध नीति,अस्त्र - शस्त्र, दिव्यास्त्र, आधुनिक संदर्भ। | यह शोध - पत्र रामचरितमानस में निहित आयुध विज्ञान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मानस में वर्णित विभिन्न अस्त्र - शस्त्रों ,उनके प्रयोग तथा युद्ध नीति की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक व्याख्या करना है। इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मानस में ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र, दिव्यास्त्र जैसे महाशक्तिशाली अस्त्रों का प्रयोग हुआ है। यह केवल पौराणिक वर्णन ही नहीं है अपितु तात्कालीन युद्ध कौशल और कला - तकनीकी की दक्षता का द्योतक है। यह अध्ययन दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय साहित्य न केवल सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों के साथ - साथ विज्ञान एवं भौतिक शक्ति का प्रतीक भी है। मानस में वर्णित आयुध विज्ञान का यह ज्ञान आधुनिक संदर्भ में भी प्रासंगिक है। |

**परिचय -**

युद्ध मानव सभ्यता के इतिहास का एक तामसी प्रवृत्ति एवं विनाशकारी पक्ष रहा है।मनुष्य अपनी सुरक्षा के लिए जिस विज्ञान का आविष्कार किया वह आयुध विज्ञान है। आयुध का अर्थ है - वे यंत्र जो युद्ध में प्रयोग होते हैं।मानव का जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण रहा है। अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

जिन यंत्रों का प्रयोग मनुष्य ने किया उसे आयुध विज्ञान कहते हैं। यह आयुध मानव की बुद्धि एवं अनुभव का परिणाम है। आयुधों का प्रयोग उसकी विशेषताओं के आधार पर होता है, जैसे:- अस्त्र - वे आयुध जिसे फेंककर मारा जाता है । उदाहरण के लिए - भाला, गुलेल आदि। शस्त्र - वे यंत्र जिसे फेंककर नहीं मारा जाता, जैसे - तलवार, बरछा,गदा, फरसा आदि। मुक्ता, अमुक्ता,यन्त्रमुक्ता, पाणिमुक्ता, मुक्तामुक्त, मुक्तसंनिवृत्ति आदि वैदिक कालीन आयुध थे। तुलसीकृत रामचरितमानस धर्म और मर्यादा पूर्ण है। मानस में वर्णित युद्ध मानवीय मूल्यों के अनुरूप है।मानस में विभिन्न प्रकार के अस्त्र - शस्त्रों का उल्लेख है,जिनमें धनुष - बाण,गदा, तलवार तथा अनेक दिव्य अस्त्र प्रमुख हैं।आधुनिक संदर्भ में इन आयुधों की अवधारणा को वैज्ञानिक दृष्टि, नैतिक युद्धनीति और सुरक्षा व्यवस्था के साथ जोड़ा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मानस में वर्णित आयुधों का विश्लेषण करना एवं युद्ध नीति को समझना है।

**मानस में आयुध का वर्णन -**

मानस में आयुध का वर्णन आद्योपंत हुआ है। वे केवल आयुध ही नहीं बल्कि वीरता के प्रतीक हैं । शक्ति, धर्म और पराक्रम के प्रतीक हैं। तुलसीकृत रामचरितमानस के बालकाण्ड में विश्वामित्र प्रसंग में राम के द्वारा आयुध कौशल के प्रदर्शन में इसका उल्लेख हुआ है। ताड़का को जब राम मारते हैं तब राम की शक्ति,संयम और लक्ष्य पर सटीक प्रहार तथा धर्म - अधर्म के बीच स्पष्ट भेद को समझने की शक्ति को जानकर विश्वामित्र राम को दिव्य आयुध प्रदान करते हैं।

**"आयुध सर्ब समर्पि कै, प्रभु निज आश्रम आनि।।"1(बालकाण्ड)**

'सर्वआयुध' से समस्त दिव्यास्त्र और उनके संधानविधि जना दिए जिनका विस्तृत वर्णन वाल्मीकि रामायण में है। ये आयुध थे - दंडचक्र, धर्मचक्र, कालचक्र, विष्णुचक्र, ऐंद्रचक्र, वज्रास्त्र, शिवजी का श्रेष्ठ शूल, ब्रह्मशिर, ऐषिक, ब्रह्मास्त्र, मोदकी और शिखरी नाम की गदा , कालपाश, धर्मपाश, वरुणपाश, दो अशनी (एक शुष्क, दूसरी आर्द्र) शिवास्त्र और नारायणास्त्र, अग्नि का प्रिय अस्त्र शिखर, वायव्य, हयाशिर, क्रौंच दो शक्तियां, कंकाल, मूशल, कपाल, किंकिनी नंदन, गंधर्वों का मोहनास्त्र, प्रस्वापन, प्रशमन, वर्षण,शोषण, संतापन और विलापन गुणवाले अस्त्र, चंद्र का शिशिर, दारुण त्वास्ट्र और शीतेषु नामक अस्त्र, कामदेव का दुर्धर्ष मादन मानव, मोहन, तामस, सौमन, संवर्त और मौसल, सत्य और मायामय,सूर्य का तेज, प्रभु अस्त्र।**2(मानस पीयूष पृ.199)**

'ये समस्त आयुध कामरूप हैं। जब जिसका स्मरण किया जाता वह समीप आ जाता है' **3(वाल्मीकि रामायण1/22)**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

इस प्रकार इन दिव्य अस्त्रों को नियंत्रित करने का कौशल भी विश्वामित्र द्वारा बताया जाता है। आध्यात्म रामायण में इसका वर्णन है -

**'सर्वास्त्रजालं सरहस्यमंत्र प्रित्याभिरामाय ददौ मुनींद्रः।'4**

इन आयुधों की विशेषता मंत्र द्वारा संचालन होना था। जिनमें उच्चारण की सक्रियता शामिल थी। बिना कारण इनका प्रयोग वर्ज्य था।इन अस्त्रों से प्राकृतिक तत्वों अग्नि, वायु ,जल आदि पर नियंत्रण किया जा सकता था।मानस के इन आयुधों में तंत्र - मंत्र - यंत्र ये तीनों कार्य करते थे। तंत्र का शाब्दिक उद्भव तनोति त्रायति तंत्र माना जाता है, जिसका अर्थ तनना या विस्तार करना है।

'भारतीय परंपरा में किसी भी व्यवस्थित ग्रन्थ, सिद्धांत, विधि ,उपकरण तकनीक या कार्यप्रणाली को तंत्र कहते हैं। इसी तंत्र से घातक नागपाश और ब्रह्मपाश का जन्म माना जाता है। इसमें यंत्रों के स्थान पर मनुष्य के बीच रहने वाली विद्युत शक्ति को इस प्रकार संपन्न बनाया जाता था जिससे प्रकृति से सूक्ष्म परमाणु ऊर्जा उसी स्थिति में परिणत हो जाते थे जैसा मनुष्य चाहता है।'**5(डॉ.जयश्री,आर,2026)**

मंत्र का प्रयोग मानस में अनेक बार हुआ है। जयंत प्रकरण में यह देखने को मिलता है।

**'चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना।।' 6(अरण्यकांड)**

जयंत इंद्र का पुत्र था जिसने राम के बल बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए कौवे का रूप धारण कर सीता के चरणों को अपनी चोंच से आहत कर भागने लगा। उस समय सीता के बहते रुधिर को देखकर राम ने अपने मंत्र से सींक अर्थात तिनका का बाण बनाकर संधान किया, जो ब्रह्मसर अर्थात ब्रह्मास्त्र बन गया।

**'प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा। चला भाजि बायस भय पावा।।' 7(अरण्यकांड)**

इस प्रकार सींक का ब्रह्मबाण में निरूपण होना तंत्र मंत्र यंत्र का विशेष उदाहरण मिलता है।

मंत्र का प्रयोग चार प्रकार से होता है - मारण, मोहन , वशीकरण और उच्चाटन। मंत्र ध्वनि विज्ञान है। दिव्यास्त्र मंत्र से ही संचालित होता था। इसका प्रयोग मानस के अनेक प्रसंगों में मिलता है।

जैसे :- मारण का प्रयोग - तड़का वध में - प्रसंग - बालकाण्ड के दोहा क्रमांक 209 में किया गया।

**'एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।'8(बालकाण्ड/दोहा 209/चौ.6)**

ताड़का एक ही बाण से मरने वाली नहीं थी किंतु विशेष बाण(मारण) के प्रयोग से वह मृत्यु को प्राप्त हुई।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

मोहन और वशीकरण का प्रयोग अरण्यकांड में खर- दूषण और त्रिसिरा वध में किया गया। शूर्पणखा के कहने पर खर- दूषण और त्रिसिरा अपनी सेनाओं सहित राम और लक्ष्मण को मारने आए तब राम ने इस मंत्र का प्रयोग किया जिससे सभी राक्षस उनके रूप से मोहित हो गए और मन में विचार करने लगे कि ये सुंदर बालक वध के लायक नहीं है। इनका रूप अत्यंत सुंदर और अनुपम है। यथा -

**'प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी। थकित भई रजनीचर धारी।।'9(अरण्यकांड ,दोहा 19, चौ.1)**

पहले राम को देखकर मोहित हो जाते हैं पर राम के उकसाने पर राक्षसों ने धनुष - बाण,तोमर, सांग,बरही, कटार, परिघ और फरसा आदि अनेक शस्त्रों से राम को मारने दौड़ते हैं। तब राम नाराच नामक बाण का संधान करके छोड़ते हैं जिससे भयानक राक्षस कटने लगे।

**'रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि।**

**छांड़े विपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिसाच।'10(अरण्यकांड ,दोहा 20 क छंद 7,8)**

इस युद्ध में मायावी राक्षसों को मारने के लिए राम द्वारा मंत्र का प्रयोग किया गया। यथा -

**" सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक कर्यो ।**

**देखहिं परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्यो।।"11(अरण्यकांड)**

' मायानाथ ' में रहस्य छुपा है। 'अति कौतुक' का अर्थ वह विशेष मंत्र है जिसके कारण समस्त राक्षस एक दूसरे को राम समझकर काटने लगे। इस प्रकार सभी राक्षस स्वमेव नष्ट हो गए। यह वशीकरण का प्रभाव था। कुछ मंत्रोजनित आयुध अदृश्य भी थे जैसे उच्चाटन मंत्र का प्रयोग इंद्र ने चित्रकूट में सबके ध्यान को भटकाने के लिए किया। यथा -

**'मागेउ विदा प्रणामु करि राम लिए उर लाइ।**

**लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ।।' 12(अयोध्याकांड दोहा316)**

तड़का वध के पश्चात यज्ञ की रक्षा के लिए सुबाहु जैसे राक्षसों को मारने हेतु पावक सर अर्थात अग्नि बाण का प्रयोग किया गया तथा मारीच के लिए बिना फर(नोक) के बाण का प्रयोग किया गया।

**'बिनु फर बान राम तेहि मारा। से योजन गा सागर पारा।।**

**पावक सर सुबाहु पुनि मारा।अनुज निसाचरकटकु संघारा।।'13 (बालकाण्ड,दोहा 210,चौपाई 4,5)**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

सीता स्वयंवर में आयुध ही मुख्य शर्त थी जिसे धनुष यज्ञ का नाम दिया। पिनाक शिव का धनुष जो अत्यंत विशाल ,दिव्य और भारी जिसे उठाना हर किसी के बस की बात नहीं थी।

**'भूप सहसदस एकहि बारा। लगे उठावन टरहि न टारा।।' 14(बालकाण्ड)**

पिनाक में प्राण था। इसलिए पिनाक में निज विस्तार हल्केपन व भारीपन होने की क्षमता थी,जो इसकी वैज्ञानिकता को दर्शाता है। कर्षण क्षमता होने के कारण छूने, हिलाने और टसकाने के क्रम में कर्ता को शक्ति विहीन कर लेना इस आयुध की विशेषता थी। राम गुरु की आज्ञा पाकर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए गए और उन्होंने अपनी कुशलता का परिचय भली भांति दिया।

रामचरितमानस में धनुर्विद्या के अंतर्गत शब्द भेदी बाण,अमोघ बाण का वर्णन होता है। शब्द भेदी बाण की विशेषता ध्वनि को सुनकर लक्ष्य में संधान करना होता है। यह आज के बैलिस्टिक मिसाइल जैसी थी। राजा दशरथ ने इसी बाण का प्रयोग किया था जो श्रवण कुमार को जाकर लगा तथा जिसके कारण श्रवण के माता - पिता ने दशरथ को श्राप दिया। मानस में इसे अति संक्षेप में कहा गया है।

**'तापस अंध साप सुधि आई। कौसल्यहि सब कथा सुनाई।।' 15(अयोध्याकांड,दोहा155,चौपाई4)**

मानस के इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि यदि अपनी विद्या एवं शक्ति का प्रयोग बिना विचारे करेंगे तो उसका परिणाम बुरा होता है ।फलस्वरूप राजा दशरथ को पुत्र वियोग में प्राण जाने का श्राप मिला।

इसी प्रकार अमोघ बाण की उन्नत अवधारणा थी। रामचरितमानस में अमोघ शब्द की आवृत्ति पांच बार हुई है। जिसमें तीन बार सुंदरकांड में ,एक बार लंकाकांड में और एक बार उत्तरकांड में प्रयोग किया गया है। अमोघ का अर्थ है अचूक। राम के बाण को अमोघ कहा गया क्योंकि उनका बाण लक्ष्य को निश्चित रूप से भेदता था। आधुनिक दृष्टिकोण से यह मार्गदर्शित मिसाइल जैसा है, जिसमें लक्ष्य निर्धारण की क्षमता होती है।

रामचरितमानस में युद्ध का विशद् वर्णन लंका कांड में है। युद्ध में प्रयोग होने वाले ऐसे - ऐसे दिव्यास्त्रों का वर्णन है जो जीव - जंतु, वस्तु, अग्नि, जल,उपल, हाड़ मांस,खून आदि बरसाते थे। यथा -

**'नभ चढ़ि बरस बिपुल अंगारा। महि ते प्रकट होहिं जलधारा।।**
**नाना भांति पिसाच पिसाची। मारु काटु धुनि बोलहिं नाची।।**
**बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा। बरसई कबहुँ उपल बहु छाड़ा।।' 16(लंकाकांड)**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

इसके अलावा ऐसे भी अस्त्र थे जिसे नग्न आंखों से दिखाई नहीं देते थे और लक्ष्य को भेदकर वापस तरकस पर आ जाते थे।

**रामचरितमानस में आयुधों का स्वरूप :**

**धनुष बाण -** मानस का प्रमुख आयुध धनुष - बाण ही है । रामचरितमानस में अधिकतर धनुष - बाण का ही वर्णन है। इसकी विशेषता के कारण ही राम - लक्ष्मण धनुर्धारी कहलाए।

**दिव्यास्त्र -** दिव्यास्त्र के अंतर्गत वे आयुध आते थे जो मंत्रोच्चारित थे। वे निम्नलिखित हैं-

**ब्रह्मास्त्र -** यह अस्त्र ब्रह्मा से संबंधित था। अचूक और विनाशकारी था। इसे विशेष अथवा अंतिम विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाता था।

**आग्नेयास्त्र -** यह अस्त्र अग्नि देव से संबंधित था। यह शक्तिशाली अस्त्र था।

**वरुणास्त्र -** यह जलदेव वरुण जी का अस्त्र था। यह आग्नेयास्त्र का शमन करने में सक्षम था।

**नागपाश -** यह अस्त्र सर्पों की शक्ति से युक्त था। इसे ब्यालपाश भी कहा जाता था। इसका प्रयोग जहरीली रस्सी की तरह दुश्मनों को बांधने के लिए किया जाता था। मानस में मेघनाथ द्वारा हनुमान तथा राम - लक्ष्मण को बांधा गया था।

**गरुणास्त्र -** यह अस्त्र नागपाश का तोड़ था। यह सर्प के बंधन से मुक्त करने वाला अस्त्र था।

**इंद्रास्त्र** - यह इंद्र का अस्त्र था जो अत्यंत शक्तिशाली व तीव्र प्रहार करने वाला होता था।

**वायव्यास्त्र -** यह वायु की नियंत्रण का अस्त्र था। यह तेज गति का तूफान पैदा करता था।

**पाशुपतास्त्र -** यह शिव का अस्त्र था। यह अत्यंत दुर्लभ और नियंत्रित प्रयोग वाला होता था जो संहार के लिए उपयोग में लाया जाता था।

ये सभी अस्त्र मंत्र सिद्ध होते थे जिसका प्रयोग कुशल योद्धा ही कर सकता था। इसके प्रयोग की मर्यादा और नीति होती थी।

अन्य आयुधों में **गदा, तलवार, त्रिशूल, भाला, बरछा, फरसा, कटार, खड्ग,खटवांग, पाश, पर्वत, वृक्ष की डालियां ,स्तंभ, मुष्टि, गर्जन आदि थे, जो परिस्थितियों के अनुसार प्रयोग में लाए जाते थे।**

मुष्टि प्रहार और गर्जन का विशेष वर्णन है। यथा -

**'मुठिका एक महा कपि हनी।(सुंदरकांड)**

**चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्त्रवहीं सुनि निसिचर नारी।।'17 (सुंदरकांड)**

इस प्रकार मुष्टि प्रहार और घोर गर्जन युद्ध में प्रयोग होने वाले प्रमुख तकनीक थे।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

**मानस के आयुध आधुनिक संदर्भ में :**

आधुनिक युग मशीनों का युग है। आज तंत्र की विशेष प्रणाली उन्नत है। धनुष बाण की जगह बंदूकें पिस्तौल ,मशीनगन और राइफलें ले चुकी हैं। आज अमोघ बाण के रूप में गाइडेड मिसाइल, बैलेस्टिक मिसाइल काम कर रहा है। एक साथ अनेक बाण छोड़ने की कला का यह रूप आर्टिलरी (तोप, मोर्टार ) ने ले ली है। आधुनिक दिव्यास्त्र की तरह काम करने वाले ड्रोन स्ट्राइक सिस्टम,लेज़र - गाइडेड बम है जो सटीक, नियंत्रित वार करने वाले और तकनीकी रूप से उन्नत हैं। आग्नेयास्त्र के रूप में थर्मोबैरिक, ग्रेनेड, इंसेंडियरी तकनीक,फ्लेमथ्रोवर,क्रूज मिसाइल है। वरुणास्त्र का आधुनिक रूप फायर फाइटिंग सिस्टम के अंतर्गत दमकल की तकनीक वाटर कैनन है जो जल प्रहार का आधुनिक रूप है। इसी तरह एरियल वाटर बॉम्बिंग है जो जंगल की आग को बड़े पैमाने पर वर्षा के जल जैसे प्रभावित करता है। क्लाउड सीडिंग भी वरुणास्त्र का रूप है जो कृत्रिम वर्षा करवाता है। ब्रह्मास्त्र के रूप में परमाणु बम है जो विनाशकारी है।

**निष्कर्ष :**

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी के प्रयोग की नीति कैसी होनी चाहिए ? मानस में युद्ध धर्म की रक्षा के लिए थी। मानव सभ्यता की प्रगति का आधार विज्ञान और आध्यात्म है। विज्ञान ने जहाँ जीवन को सुविधाजनक और उन्नत बनाया है,वहीं आध्यात्म प्रेम ,दया, करुणा जैसे भावनाओं से मानवता को बचाए रखा है। आध्यात्म एवं विज्ञान मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार धर्मयुद्ध की अवधारणा मिलती है,क्योंकि युद्ध कभी भी पहला विकल्प नहीं होना चाहिए। पहले युद्ध व्यक्तिगत द्वेष से नहीं बल्कि धर्म की रक्षा के लिए होती थी। इसका नैतिक दृष्टिकोण होता था। यह नैतिक दृष्टिकोण आध्यात्म की उपज है। सभी धर्म से श्रेष्ठ मानव धर्म है। मानवता का भाव यदि प्रत्येक मनुष्य में जग जाए तो इन आयुधों की आवश्यकता ही नहीं होगी । मानवता के रक्षार्थ ही इन आयुधों का उपयोग हो। तब रामराज्य की कल्पना साकार हो जाएगी।

**AUTHOR(S) CONTRIBUTION**

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

**CONFLICTS OF INTEREST**

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

**PLAGIARISM POLICY**

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

**SOURCES OF FUNDING**

The authors received no financial aid to support for the research.

**संदर्भ ग्रंथ (REFERENCES)**

1. तुलसीदास रा.च.मा. बालकाण्ड,दोहा क्रमांक 209, मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर।
2. मानस पीयूष भाग 3 बालकाण्ड, पृष्ठ क्रमांक 199, गीताप्रेस गोरखपुर।
3. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड, बाईसवां सर्ग, श्लोक 13 से 23 ।
4. महर्षि वेदव्यास आध्यात्म रामायण, प्रथम सर्ग
5. TANTRA, YANTRA, AND MANTRA - ITS SIGNIFICANCE - Hitaya - ISSN 2581-7787 https://share.google/pyy6h2J2LCHzF1IUH
6. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक 1 चौपाई क्रमांक 8 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
7. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक 2 चौपाई क्रमांक 1 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
8. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकांड, दोहा क्रमांक 209 चौपाई क्रमांक 6 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
9. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक 19 चौपाई क्रमांक 1 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
10. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक 20 छंद क्रमांक 2 का 3- 4 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
11. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक20 छंद क्रमांक 8 का 3- 4 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
12. तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकांड, दोहा क्रमांक 316 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
13. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकांड, दोहा क्रमांक 210 चौपाई क्रमांक 4 - 5 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

उमा (2026). मानस में आयुध विज्ञान. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),148-156.

14. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकांड, दोहा क्रमांक 251 चौपाई क्रमांक 1 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
15. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा क्रमांक 155 चौपाई क्रमांक 4 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर
16. तुलसीदास, रामचरितमानस, लंकाकांड, दोहा क्रमांक 52 चौपाई क्रमांक 1,2,3 मूल गुटका गीताप्रेस गोरखपुर

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License